मानव मन्दिर

1/78

4-5

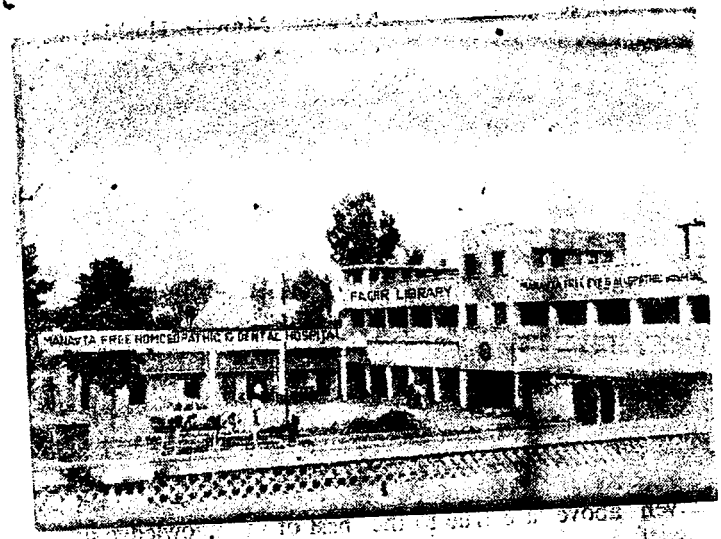

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

FORM IV

(See Rule 8)

Place of Publication	**Hoshiarpur**
Date of Publication	**10th of every month**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Publisher's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Editor's Name	**Seth Durga Dass**
Nationality	**Indian**
Address	**House No. 2, Sector 19—A, Chandigarh.**
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur,**

I, M. R. Bhagat hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

Dated : 9-6-76

Signature of Publishers

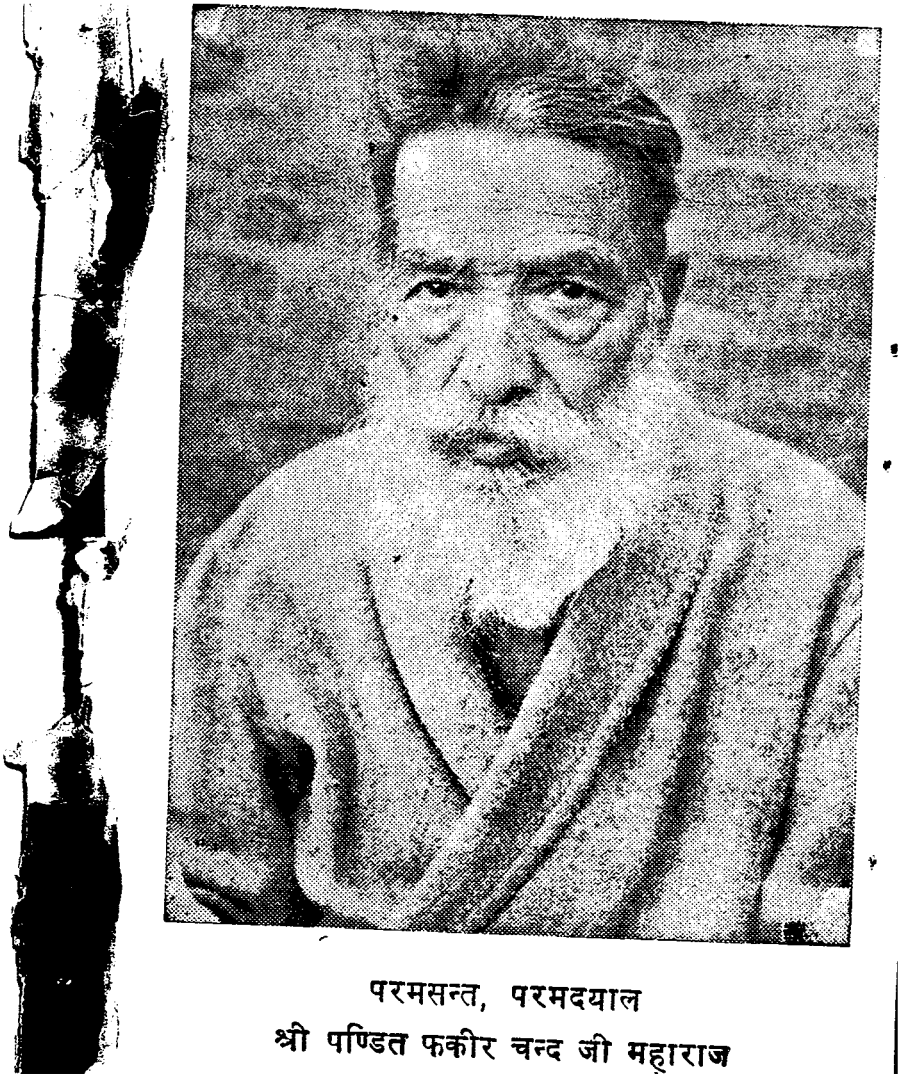

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

मासिक—

मानव मन्दिर

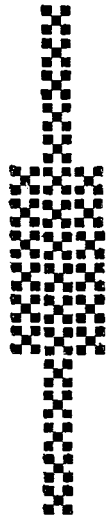

संरक्षक : परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी महाराज

सम्पादक : सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ४ | जनवरी १९७४ | संख्या ९

जीवन यात्रा

लेखिक : सेठ दुर्गादास साहिब चन्डीगढ़

राधास्वामी। आजकल संसार में हर व्यक्ति व्यस्त दिखाई दे रहा है। हर व्यक्ति जल्दी में है, समय नहीं। दौड़ लगी हुई है। हर एक दौड़ रहा है। जीवन की आवश्यकतायें बढ़ रही हैं। जीवन चाल बहुत तेज़ है। हर एक आगे निकलना चाहता है। ठहरने का समय नहीं। शान्ति प्राप्त नहीं है। मन में आशान्ति है सिर पर हज़ार सौदा सवार है क्या करे क्या न करे। विवशतायें सामने हैं। समझ में कुछ नही आ रहा। कोई मार्गदर्शक नहीं है। ईश्वर पर विश्वास नहीं है। हर एक मनमत है।

प्रश्न पैदा होता है कि ऐसे जीवन का सुधार कैसे हो मानव को कैसे शान्ति मिले, इसकी आत्मा को कैसे शान्ति मिले ? आखिर इस जीवन का क्या उद्देश्य है। वह अपने जीवन के उद्देश्य को कैसे पाये। क्या उपाय किया जाये ? महापुरुष जो इस संसार में संसार के सुधार के लिए और जनता के परोपकार

के लिए अवतार लेते हैं, फरमाते हैं कि ऐ मानव ! तू गुरु परायण बन अर्थात अपने जीवन के कुछ सिद्धान्त बनाले । इन सिद्धान्तों पर दृढ़ होकर चल तेरा जीवन बदल जायेगा, सुन्दर बन जायेगा और आपको अपने जीवन का आनन्द मिलेगा ।

वे सिद्धात क्या हैं ? सुनिये, लिखकर अपने कमरे में लटका लो ताकि सदा दृष्टि के सामने रहें और उनपर अमल होता रहे ।

१. विवाहित हो या कंवारे, शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य आबश्यक है । अपनी स्त्री की इच्छा पर रहना सीख लो ।

अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखो और सदा कम करने का यत्न करो ।

३. निंदा चुग़ली का त्याग हो । आपने दृष्टिकोण को ऊंचा बनाओ, मधुमक्खी बन जाओ ।

४. खुराक भोजन वस्त्र सादा रहें ।

५. सदा पूर्वजों की मान प्रतिष्ठा करो ?

६. नींद और खुराक में संयम हो ।

७. अपने आपको धोखा मत दो ।

८. अपने स्वार्थ के लिए झूठ मत बोलो ।

अगर आप अध्यात्मिकता के अधिकारी बनना चाहते हैं, आसमानी सैर के इच्छुक हैं और शान्ति की इच्छा रखते हैं तो निम्नलिखित सिद्धान्त और शामिल कर लेवें सफलता होगी।

९. अपनी नेक कमाई का कुछ भाग हर दिन हर वर्ष दान में अवश्य दिया जाये।

१०. दान देने की निराली विधि यह है कि आप नया कोट सलवाने लगें, आपको ४० रुपये प्रतिगज़ का कपड़ा पसन्द आया, फैसला करलो ३० रुपये गज़ का कपड़ा मोल लोगे। जो रकंम बच जाये, दान में देदो।

११. खूब परिश्रम करो, खूब व्यस्त रहो कि अवकाश तक न मिले। खूब कमाओ, खूब धन इकट्ठा करो परन्तु इमानदारी से

१२. अपने आपको एकान्तप्रिय बनालो। कभी २ दिन में ऐकान्त सेवन किया करो।

१३. मित्र और शत्रु को एक समान जानो।

१४. वासनाओं को अनुकुल बनालो।

१५. दूसरों के कामों में दखल मत दो, हर समय यह प्रश्न ज़बान पर रहें "तुझे क्या"

१६. सब काम कर्तव्य समझकर किये जायें। आसक्ति मे अनासक्ति पैदा करने का यत्न किया जाये। उदाहणत: आप अपने बच्चे से प्यार करते हो, खूब प्यार किया करो। कर्तव्य समझकर प्यार किया करो क्यों कि वह आपका लड़का है। आपका कर्तव्य प्यार करना है लेकिन प्यार में फंसो मत !

१७. अपने मन को सदा सम अवस्था में रखने का अभ्यास करो।

१८. हर्ष शोक रहित जीवन व्यतीत करने का नाम योग है। योग पर अमल किया करो।

१९. "एक रूप सब माहिं" एसा विचार किया करो

२०. अगर ईश्वर विश्वासी हो तो बहुत अच्छा फिर ऐसा समझो कि जो कुछ मेरे साथ हो रहा है, हो चुका है और भविष्य में होगा मेरे लिए अच्छा होगा। ऐसा विश्वास करलो ऐसा ही होगा।

दाता आप सबका कल्याण करें !

सबको राधास्वामी !

शब्द भेद

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक 4-9-77

है यही शिक्षा गुरु की, गुरु का गुन गाओ सदा ।
गुरु चरन में करदो अरपन, देह धन मन सर्वदा ।।
गुरु तुम्हारे घट में है, घट ही में दर्शन की चाह ।
शब्द गुर का संग हो, कोई नहीं गुर दूसरा ।।
वह तुम्हारा तुम हो उसके, है वह घट में रात दिन ।
घट में ढूंढो घट में पाओ, घट का परदा दो उठा ।।
वह अधर ब्यापा है घट में घट ही में पाओगे तुम ।
बात मैं कहता हूं सच, जिसको मिला घट में मिला ।।
राधास्वामी की दया से, पूरा करलो काम अब ।
नाम लो विसराम लो, धन धाम लो तुम घट में आ ।।

राधास्वामी ! यह दाता दयाल जी का शब्द है । वह फरमाते हैं गुरु के गुण गाते रहो और फिर वह

आगे क्या कहते हैं ? गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है मगर हम तो स्तुति करते है बाबा सावनसिंह जी की, महर्षि जी की या गुर नानक साहिब की। यही स्तुति करते हैं ना। गुरु नानक साहिब ने यह कहा, राधास्वामी दयाल ने यह कहा, मेरी स्तुति भी कई करते रहते हैं ! उन्होंने यह कहा, उन्होंने वह कहा। मैं हूं खोजी (Researcher) सच्चाई की तलाश करता हूं कि हकीकत है क्या ? अब किस गुरु के गुण गायें।

है यही शिक्षा गुरु को गुर का गुण गाओ सदा।
गुर चरण में कर दो अर्पण देह. धन. मन सर्वदा ।।

वह कहते हैं कि गुरु के चरणों में तन, मन, धन सब दे दो। अब किस गुरु के चरणों में तन, मन, धन दें ? हम तो बाहर यह समझते हैं कि बाबा फकीर के चरणों में, दाता दयाल के चरणों में या बाबा सावनसिंह के चरणों में तन धन दें मगर वह तो यह कहते हैं कि गुरु रहता कहां है ?

गुरु तुम्हारे घट में है, घट ही में दर्शन की चाह
शब्द गुरु का सग हो, कोई नहीं गुरु दूसरा

कितनी सच्चाई से वर्णन कर गये ! कुछ झूठ बोला ? अब हम किस गुरु के गुण गायें ? यह एक प्रश्न है। गुण गाने का क्या भाव है ? जब किसी ने

हमारे साथ नेकी की हुई होती है तो हम उसका उपकार मानते हैं यही गुण गाना है। किस गुरु का उपकार मानना हैं ? इस बात का जानना कि सृष्टि कैसे पैदा होती है, कैसे समाप्त हो जाती है, इस बात का ज्ञान होना मेरी समझ में गुरु के गुण गाना है। गुरु नाम है शब्द का। उसके चरणों में तुम तन मन धन देदो। वह कहते हैं गुरु तुम्हारे घट में है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हू फकीर चन्द ! जब गुरु है ही घट में तो गुरु के गुण केस गायेगा ? पहले तो मुझे यही पता नहीं था कि गुरु है कौन ? मैं तो दाता दयाल महर्षि जी का ही जफ्फा मारे बैठा था। उन्हीं की मूर्ति, उन्हीं का ध्यान किया करता था। जब मै ऐसा किया करता, इतना प्रेम किया करता तो वह मुझे फटकारा करते थे कि तू काहे दीवाना हो गया। मगर बात मेरी समझ मे नहीं आती थी। इस बात को समझाने के लिए ही मुझे यह काम दिया था। बस इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन बदल गया। अब मुझे विश्वास हुआ कि ठीक गुरु मेरे अन्तर में रहता है। गुरु है कौन ?

गुरु तुम्हारे घट में है, घट ही में दर्शन की चाह।
शब्द गुरु का संग हो, कोई नहीं गुरु दूसरा ॥
वह तुम्हारा तुम हो उसके, वह है घट में रात दिन।
घट में ढूंडो घट में पाओ, घट का परदा दो उठा ॥

मैं सोचता हूं मास्टर मोहन लाल ! कि पंथ बने धर्म बने। किसी ने कह दिया राम तुम्हारे घट में है, कोई कहता है कृष्ण तुम्हारे अन्तर है, कोई कहता है ईश्वर तुम्हारे घट में है, गुरु मत वालों ने कह दिया गुरु तुम्हारे घट में है। असलित और सच्चाई क्या है ? रात इसी धुन में रहा, दिन में भी इसी धुन में था,

कई बार सोचता हूं कि जब तू इस शरीर में नहीं आया था, तेरी "मैं या तू" कहां थी ? पहले यह बता जब तेरी 'मैं' नहीं बनी थी तो तू कहां थी ? मरके कहां जायेगा ? प्रति दिन सोचता हूं। जब अभ्यास में जाता हूं तो सोचता हूं अब मर रहा हूं जाऊंगा कहां ? मगर शरीर से निकला नहीं जाता फिर वापिस आ जाता हूं। तो मैं किस परिणाम पर पहुचा कि उस प्रभु का, मालिक का, उस प्रकृति का किसी को भी पूरा ज्ञान नहीं हुआ, न राधास्वामी दयाल को, न कबीर साहिब को, न नानक साहिब को

सबने अपने अपने विचार व अनुभव के अनुसार संसार को अपने पीछे लगाया। मुझे भेद नहीं मिला न उनको मिला। मैं यह क्यों कहता है ? क्यों कि ये बड़े २ संत जो शब्द अभ्यासी थे जिन्होने किताबें लिखी हैं उनके जीवन के हालात मैंने देखे। अगर इनको कोई शारीरिक कष्ट न होता तो मैं मान जाता कि ये कुछ बन गये हैं। प्रथम तो मैं अपने गुरु महाराज को देखता हूं। उन्होंने धाम बनाई। उनकी बाणियें पढ़ो, कितना अनुभव वह लिख गये मगर धाम को उजड़ने से न बचा सके। ऐसे ही बड़े २ संतों के हाल हैं क्या कुछ उनके साथ बीता ? फिर मैं सोचता हूं सच्चाई क्या है ? फिर किस आदमी को हम पूजें ? संत हो या परम संत हो, कोई भी क्यों न हो कर्म के चक्कर से नहीं बच सकता तो फिर मैं किस परिणाम पर पहुंचा ? एक शक्ति है अपने आपको उसके हवाले करता रहता हूं। अब तो मैं यहां पहुंचा, न दाता दयाल को याद करता हूं, न बाबा सावनसिंह जी महाराज को, न राधास्वामी दयाल को, एक शक्ति है अपने आप को उसके सपुर्द करता रहता हूं। जूं जूं उसके सपुर्द करता रहता हूं त्यूं त्यूं अपने अन्तर में मस्ती आती रहती है खुशी

मिलती है, आनन्द मिलता है, अचिन्तपना आता है। यह मेरे जीवन का परिणाम है। बचपन से भी मालिक को मानता था, पहले यह पता नहीं था कि वह क्या है, अब इतना सफर करके कहां पहुंचा ? शर्णागतम।

मैं अब राधास्वामी मत का नहीं रहा न ही मेरी आसक्ति अब राधास्वामी मत से है। राधास्वामी मत से जो चीज़ मैंने प्राप्त की है मेरा नाता उससे है। राधास्वामी नाम प्राप्त करने के बाद क्या होता है ? मानव उदारचित हो जाता है। अंश से कुल हो जाता है।

अब मैं समाधि में था, कहां था ? किसको ढूंडता था ? कोई चीज़ है उसकी तलाश करता था, उसको मैं कहता हूं राम कहां है। वह चीज़ क्या है मुझे नहीं मिलो सिवाये इसके कि जब मैं वहां जाता हूं तो अपना आप ही समाप्त हो जाता है। क्या रह जाता है ? कुछ कहा नहीं जा सकता।

दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैं सोचता हूं फकीर चन्द ! दाता दयाल जी महाराज ने क्यों कहा कि शिक्षा बदल

जाना ? एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं ? अगर बदलूं तो क्या बदलूं ? वह यही बदलता हूं कि सच्चाई मेरी समझ में यह आई है कि हमारे अपने ही जीवन का खेल है उसमें जब 'मैं' आ जाती है तो वह खेल करतीं रहती है, जब शरीर छूट जाता है तो न "मैं" न "तू" रहती है। जीवन एक चेतन का बुलबुला है। आप संसारी हैं आप लोगों को मैं क्या कहना चाहता हूं कि जैसी तुम्हारी आशा होगी वैसी तुम्हारी बासा होगी। अच्छा विचार रखो गुरु के गुण गाना क्या है ? यह कि किस ढंग से रचना होती है और फिर समाप्त होती है इस ज्ञान का नाम मेरी समझ में गुरु के गुण गाना है।

अब इस वाणी से यह तो सिद्ध हो गया कि फकोर चन्द के गुण गाना कि अमुक जगह पैदा हुआ, अमुक समय पर मर गया यह गरु का गुण गाना नहीं है। जब गुरु तुम्हारे घट में है तो इस बात का ज्ञान होना कि कैसे उत्पत्ति होती है और कैसे विनाश होता है इस ज्ञान को हर समय अपने मस्तिष्क में रखना गुरु गुण गाना है। पता नहीं दाता दयाल का क्या भाव था गुरु के गुण माने से, मैं नहीं जानता। मैं गुरु के

गुण क्या गाता हूं ? दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैं शिक्षा को बदले जा रहा हूं फिर संसार के लिए गुरु के गुण गाना क्या है ? कि यह संसार कैसे पैदा होता है ? यह वासना से, तुम्हारी इच्छा से पैदा होता है। अगर तुम गुरु के गुण गाना चाहते हो, गुण कहते हैं सिफत को गुरु का गुण क्या हो सकता है। शब्द होता है इसमें से रचना होती है संसार बनता है फिर संसार की प्रलय हो जाती है। यही गुरु का गुण गाना है, फिर क्या करो ? अपने विचार को ठीक रखो। सदा आशावादी रहो। किसी की बुराई निन्दा, किसी के साथ शत्रुता मत करो। गुरु नाम है अनुभव, ज्ञान, समझ और विवेक का कि किस विधि से संसार बनता है और प्रलय होती है तो जो आदमी अपने संकल्प को ठीक रखता है वही गुरु के गुण गाता है और वही गुरु का सेवक है। जब यह समझ आजाये तो अपनी उन्नति आप करो किसी वाह्य गुरु ने तुम्हारी सहायता नहीं करनी, तुमने अपनी सहायता आप करनी है गुरु ने तुम्हें ज्ञान देना है। वह विधि यही है "शिव संकल्पं अस्तु" अच्छे विचार रखो, अच्छे संकल्प और भाव

रखो। अपने घर वालों का भला चाहो देश का भला चाहो, मैंने गुरु का गुण गाना यह समझा है।

मेरी सारी आयु इस जनून में बीत गई। मैं ब्रह्मण कुल में पैदा हुआ मैं राम कृष्ण और भगवान को मानने वाला था। मेरा भाग्य मुझे ऐसी जगह ले आया जहां सबका खण्डन था। उन्होंने राम, कृष्ण को काल का अवतार कहा हिन्दू भी नहीं पहुंचे, मुसलमान भी नहीं पहुंचे। मैं रोया करता था कि कहां फंस गया। दाता दयाल जी महाराज से विश्वास टूटता नहीं था तो मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। आप लोग आ जाते हैं परमार्थ की तो आपको आवश्यकता नहीं कोई मेरे जैसे दो चार जनूनी होते हैं जिनको परमार्थ की आवश्यकता होती है कि मैं कहां से आया हूं। आप लोगों को बताना हूं कि वासना से संसार बनता है इसलिए अपनी वासना को ठीक करो, सदा अच्छा विचार रखो, आशावादी रहो, बुरा विचार मत रखो, किसीं से घृणा देष मत करो और घरों में शान्ति रखो। मेरी तो यही शिक्षा है। अगर तुम यह समझो

कि कोई गुरु तुम्हें तार देगा यह ग़लत है। गुरु ने तुमको सच्चा ज्ञान, समझ और विवेक देना है जो कुछ तुमको मिलता है यह तुम्हारा अपना ही प्रेम और श्रद्धा है। मुझे लोग मत्था टेकते है उनके काम हो जाते है। अब मैं सोचता हूं फकीर चन्द! मत्थे तो टकवाना जानता है क्या जो कुछ इनको मिलता है तू देता है? नहीं मैं नहीं देता इन का अपना ही विश्वास, श्रद्धा और प्रेम इनको देता है

यह सुभाष है, नरायणदास है, मेरी सेवा करते हैं मैं बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूं। यह इनकी कृपा है। पिछले जन्म का देना होगा या दाता दयाल इनके रूप में मेरी सहायता करता होगा। मैं क्या दूं तुम लोगों को? मेरे पास सिवाये शुभ भावना के और कुछ नहीं है। लोग विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं।अगर तुम विश्वास न करो तो तुमको कुछ नहीं मिलेगा। इसवास्ते जो कुछ तुमको मिलता है तुम्हारा अपना ही विश्वास है। मैं न अब हिन्दू रहा न मुसलमान और न राधा स्वामिया अब मुझमें मानवता रह गई है। जो कुछ तुम चाहते हो वह सच्चे दिल से मांगा करो। बस, यह है संसार

में जीवन व्यतीत करने की कुंजी जो मेरी समझ में आई है। "गुरु कुंजी हाथ पकड़ना" हम गृहस्थी किसी चीज़ की तलाश में दौड़ते हैं, कोई चिन्तपुरनी जाता है और कोई व्यास जाता है। हमें पता नहीं कि यह हमारी तलाश किसी ने पूरी नहीं करनी वह हमने आप करनी है बाहर के गुरु ने तुमको अपने अन्तर तलाश करने की विधि बतानी है। अन्तिम अवस्था है शान्ति निभयता, निवैरपना और अडोलपना हमने मन की इसी अवस्था को प्राप्त करना है। दाता दलाल जी महाराज का शब्द है

जिसके मन नहीं चिन्ता व्यापे जग में वही है दास फकीर।
अभय रहे चित गुरु पद राखे धीर वीर गम्भीर॥

अब संसार यह सोचता है कि यदि गुरु के पांव पर मत्था टेकोगे, गुरु के रूप का ध्यान करते रहोगे तो क्या तुम्हारी चिन्ता चली जायेगी? शब्दों के जाल में सारा संसार फंसा है। गुरु पद कहते हैं पदवी को जैसे तहसीलदार का पद, स्टेशन मास्टर का पद। गुरु पद का अर्थ है ज्ञान और अनुभव के विचार। तुम निर्भय ज्ञान से हो सकते हो किसी गुरु के पांव का ध्यान करने या गुरु को पूजने से तुम निर्भय नहीं

हो सकते न अडोल हो सकते हो। गुरु पद क्या है ? गुरु नाम है ज्ञान, समझ ओर विवेक का, जिस समझ ज्ञान से मानव को शान्ति मिलती है कि संसार क्या है, यह कैसे बनता है और कैसे प्रलय होती है ? कोई आदमी निर्भयपने को प्राप्त नहीं कर सकता। संसार ने गुरु के रूप को नहीं समझा। हमने तो सारा जीवन गूरु के रूप से ही प्यार किया, मानवता मन्दिर या किसी डेरे को याद किया। हम अभयपद कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? यह अमली Practical life है।

शान्त भाव व्यवहार परमारथ, कभी न हो दिल गीर।
अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर॥
पर की पीर न जिसे सतावे, सो अधरम बे पीर।
अपना रूप संभाले पल पल, काट मोह जंजीर॥

अब देखो ! यहां लिखा है अपना रूप संभाले पल पल" पुरुषोत्तम दास ! मेरा जीवन संतमत के समझने में बीत गया। संत यह कहते हैं कि अपना रूप वह है जो शब्द को सुनता और प्रकाश को देखता है। अपने अन्तर तुम वहां जाओ। अगर तुम वहां पहुच भी गये तो क्या तुम कुछ कर सकते हो ? यहां पर

पहुंचने वाला यदि कुछ कर सकता है तो बताओ ? अच्छा मैं नहीं तो ये बड़े २ गुरु जो नाम देते हैं क्या कुछ कर सकते हैं ? अगर ये कुछ कर सकते तो अपनी बीमारी को ही दूर कर लेते लेकिन नहीं कर सके । राधास्वामी दयाल दो साल बीमार रहे। तो मैं किस परिणाम पर पहुंचा ? अपने रूप का पहचानना क्या है ? दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। अगर आपका रूप कुछ कर सकता तो धाम क्यों उजड़ती। मैंने क्या समझा ? कि जीवन चेतन का एक बुलबुला है। प्रकाश और शब्द के मेल से उसके अन्तर 'मैं' पैदा हो जाती है शारीरिक 'मैं' मन की 'मैं' और आत्मा की 'मैं'। जब यह शरीर छूटेगा तो न 'मैं' न 'तू'।

जीवन क्या है ? मुझे कहां शान्ति मिली ? मैंने क्या समझा ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं कौन हूं ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं, गति हुई "मैं" बन गई शूं शूं हो गई ? प्रकृति के खेल का किसी को पता नहीं लगा न कोई पूर्ण रूप

से जान सका। हर धर्म वाले ने अपने आपको बड़ा कह कर दूसरे का खण्डन कर दिया। किसी को कोई पता नहीं। यह सब उसका खेल है। जैसा प्रकृति ने किसी को बनाया है वैसा वह यह खेल करता है। दोस्तो! अब मेरी पिछली आयु है पता नहीं कब चला जाऊं। मैंने सारा जीवन इस धुन में व्यतीत कर दिया। क्या समझा? मैं कौन हूं। मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। शेष यह सब लेन देन का सम्बन्ध है जिसने किसी से लेना है ले लेता है जिसने किसी का देना है वह देगा। कोई बाप बनके, कोई बेटा बनके कोई गुरु बनके और कोई भाई बनके लेता है। अब मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं। समझ गया कि जो शरीर बना है वह टूटेगा फिर न "मैं" न "तू" रहती है और यही बात सबने कही। उस भगवान की लीला का किसी को पता नहीं लगा। उसकी इच्छा से केन्द्र बन गया, 'मैं" बन गई' मैं' और 'तू' के बिना निर्वाह नहीं। बात को समझो। जीवन में 'मैं' भी रहे और 'तू' भी रहे मगर इनमें फंसो मत। कह देना आसान है अमल करना कठिन है। बहुत समय मैं भी 'मैं' 'मैं'. 'तू तू' करता रहा, जब ज्ञान हो

गया तो न 'मैं' रही न 'तू' ही रही। क्या हो गया ? Silence खामोशी यह मेरी समझ में आया है। योगी, धर्मो और कर्मी सब में 'मैं' का ही खेल है। अभी तक होश है आप आ जाते हैं तुम्हारे विचार में शक्ति है। अपना जीवन बनाना हो तो सबसे पहले अपना और अपने परिवार का भला चाहो। अगर तुम दूसरे का बुरा चाहोगे तो तुम्हारा बुरा होगा। जो दूसरों के लिए घढ़ा खोदता है उसके लिए कुँआ पहले तैयार है। आप देखते हैं कि देश में क्या हो रहा है। कल जो शासक थे आज वे जेलों में हैं। ऐसा क्यों है ? अपने अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। इस वास्ते सर्वसाधारण के लिए यह शिक्षा है कि अच्छे बनो, घरों में शान्ति रखो और मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो। किसी दुखिये की सहायता करो। बाबे फकीर को तो दस २ सवज़ियों से खाना खिलाते हो परन्तु अपने बूढ़े सास ससुर को सूखी रोटी देते हो। तुम पापी हो, दोषी हो Charity begins at home. याद रखना, जिसने अपने मां बाप की सेवा नहीं की वह सुखी नहीं रह सकता। हम गृहस्थियों के लिए सबसे आवश्यक यह काम है

अध्यात्मिकता की तो संसार को आवश्यकता नहीं है। घर में रहो अपने कर्तव्यों का पालन करो मगर आज कल कौन करता है। सास और बहुओं की आपिस में शत्रुता, भाईयों २ की शत्रुता। इस वास्ते अगर संसार में सुखी रहना चाहते हो तो अपने विचार को ठीक करो, नीयत को साफ रखो, प्रेम से रहो, घरों में शान्ति रखो यह गृहस्थियों के लिए है और पार जाना चाहते हो तो मेरी तरह जनूनी बनो।

आप लोग आ जाते हैं, मैं एक बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूं। मैं न पाखण्ड जगाना चाहता हूं न किसी को धोका देता हूं। मेरे पास शुभ भावना है सच्चे दिल से चाहता है आपको स्वस्थ्य मिले, खाने को रोटी मिले और मन को शान्ति मिले। एक आशा रखो। मालिक जो करता है ठीक करता है।

सब को राधास्वमी !

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक 25-9-77

साधो भाई जीवत ही करो आसा।
जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फांसि न काटी, मुए मुक्ति की आसा।
तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा।
अबहुं मिला सो तबहुं मिलैगा, नहिं तो जयपुर बासा।
दूर दूर ढूढै मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा।
साध संत को करै बन्दगी, कटै करम की फांसा।
सत गहै सतगुरु को चीन्है, सत्त नाम बिस्वासा।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।

राधास्वामी। दाता दयाल याद आते हैं। जब गिद्दड़बाहा आये उन्होंने कहा सत्संग कराते रहना, तुम में कमज़ोरियां हैं इस काम से तुम्हारा भला होगा। कल रात को इस शब्द की याद आई थी।

आपनी आत्मा से पूछता रहता हूं फकीर चन्द, संत बन गया लोगों को उपदेश करता है, पहले तू बता तू मुक्त हो गया ? यह एक स्वाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं।

साधो भाई जीवत ही करो आसा।
जीवत समुझे जीवत बुझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम को फांसि न काटी, मुए मुक्ति की आसा।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों भई ! तूने कर्म की फांसी काट दी ? तू जीवन मुक्त हो गया ? यह स्वाल मैं अपनी आत्मा से करता हूं, तुम को क्या कहूं। कबीर साहिब कहते हैं "जीवत समुझै, जीवत बूझै" मैंने किसी चीज़ को समझा और इस को बूझा है और समझ कर और जान कर इस को माना है, जब तक समझ बूझ मेरे साथ रहती है तब तक तो मैं मुक्त हूं और जब समझ बूझ खत्म हो जाती है तो मैं भी मुक्ति से गिर जाता हूं। मुक्ति है क्या चीज़ ? किसी आदमी का किसी के साथ जो सम्बन्ध अथवा बन्धन है, उस बन्धन का टूट जाना मुक्ति है। बीमारी है, दवाई खा ली, बीमारी से मुक्ति हो गई तो मैंने क्या समझा, अपनी आत्मा से पूछता हूं। अभी मैं अभ्यास में था, कहां था ? यही पूछता था,

अपने अन्तर चलता था, मुझे कोई दावा नहीं कि मैं ने जो कुछ समझा है वही ठीक है, मैंने क्या समझा ? वस केवल इस ख्याल ने कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे नहीं पता होता, मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, मैं नहीं होता वो उनका अपना ही मन है, इस समझ ने मुझ को यह यकीन करा दिया कि मेरे अन्तर भी जितने मन के ख्यालात, विचार, भाव और शकलें बनती हैं जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता मैं यह समझता हूं कि सारा अपना ही मन है। जब से यह विश्वास हो गया कि सारा अपना ही मन है, तो बन्धन भी मेरे ही मन का था। मैं अपने मन से किसी को बाप, किसी को बेटा, किसी को गुरु, किसी को कुछ, किसी को कुछ, अपने मन से ही मानता था। तो जब तक मैं किसी को मानता था मैं बन्धन में था और जब मानना ही छोड़ दिया तो मुक्ति तो अपने आप मिल गई।

मेरी तो अकल चक्कर खा गई है, रोज़ चिट्ठियां आती हैं कोई कहता है मैंने यह कर दिया, कोई कहता है मेरा रूप जाग्रत में यह कर गया, मैं तो होता नहीं केवल इस एक बात से, मुझे क्या समझ

आई ? कबीर साहिब कहते हैं कि ज़िन्दगी में ही समझो, ज़िन्दगी में ही इस को बूझो, क्या समझो यह तो कबीर साहिब को पता होगा, कबीर क्या समझाता है लोगों को, मैं नहीं जानता। मैंने क्या समझा, कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह सारे का सारा माया है कल्पना है। तुम्हारे दिमाग़ के अन्तर इतने ख्याल बैठे हुए हैं जिन का कोई हिसाब नहीं मैंने यह समझा बूझा इस समझ बूझ से मुझ को क्या मिला ? मेरे अन्तर में अनेक प्रकार के जो संकल्प या बातें होती हैं जब तक तो मुझ को यह समझ बूझ रहती है तब तक तो मैं उसके चक्कर में नहीं आता, जब यह समझ भूल जाता हूं तो इस आयु में भी मैं कुएं में गिर जाता हूं।

जब तक मुझे यह याद रहता है कि भाई, यह जो कुछ भी है यह माया है, है नहीं, तो क्या होता है ? मुझे कोई दुख सुख नहीं व्यापता, मैं बन्धन से मुक्त होता हूं और जब भूल जाता हूं फिर मैं भी बन्धन में आ जाता हूं। अभी मेरी यह अवस्था सदा के लिये पारिपक्कव नहीं हुई बात सच्ची कहता हूं।

जीवत समुझै जीवत बुझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फांसि न काटी, मुए मुक्ति की आसा।

अब कबीर साहिब तो कह गये हैं, अपने आप को समझाता हूं, मैं तुम लोगों को सत्संग नहीं कराता मेरे दिल के अन्तर किसी जगह पहुंचने की इच्छा थी इन सन्तों की बानियों ने मेरे दिमाग़ को चक्कर में डाला हुआ था, मुझे समझ नहीं आती थी। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं पुरुषोत्तम दास ! कर्म की फांस कैसे काटी जाये ? हम ने जो कर्म किये हुए हैं इस की फांस कैसे काटी जाये कबीर ने तो कह दिया, मैं क्या समझता हूं ? कर्म नाम है जो कुछ हम करते हैं, विचार करते हैं, आस करते हैं, आस रख के ही तो कर्म करते हैं। जैसे धन कमाने के लिए करते हैं। तो मैं कर्म को कैसे काटता हूं, तुम को कुछ नहीं कहता, जब मुझे यह यक़ीन हो गया कि यह जो कुछ भी मेरे अन्तर फुरना फुरती है यह है नहीं यह Suggestions हैं impressions हैं फिल्में हैं, असल नहीं, जिस तरह आप सिनेमा जाते हैं तो जो तसवीरें तुम्हारे सामने आती हैं, औरतें नाचती हैं, कतल होते हैं, हवाई जहाज़ उड़ते हैं, क्या वहां हवाई जहाज़ उड़ते हैं या औरतें नाचती हैं। नहीं ! है क्या वो ? वो फिल्में बनी हुई हैं, उनके पीछे बल्ब लगा

हुआ है। फिल्मों के ऊपर रोशनी पड़ती हैं, वो बड़ी मालूम होती हैं वो उन फिल्मों की छाया होती है और तो कुछ नहीं। इसी तरह कर्म की फांस है, कोशश करता हूं कि कर्म की फांस कट जाये।

कर्म करना क्या है ? जो कुछ मेरे अन्तर फुरना फुरती है मैं उस के अन्तर फंसता नहीं, इसी का नाम है कर्म में न फंसना। आप ने आम तौर पर कहते सुना होगा कि ज्ञानी अगर कतल भी कर दे उस को पाप नहीं, वो क्यों ? वो जो कतल किसी को करेगा वो उसकी अपनी नीयत् से नहीं, वो पिछले जन्मों की वजह से उसने काम किया है, उसकी अपनी ग़रज़ नहीं होती। स्वाभाविक, मेरे अन्तर इस समय भी पुरुषोत्तम दास, कई बार ऐसे ख्याल उठते हैं या कोई दृश्य अपने आप आ जाते हैं जिन को मैं नहीं चाहता मगर आते हैं। तो उनको मैं कैसे काटता हूं इस ज्ञान से कि यह तो Suggestions and impressions जो मेरे दिमाग़ पर पड़े हैं, वे शक्लें आती हैं और अधिकतर मुझे तंग करते हैं, यह सत्संगी लोग जो मुझे अपने ध्यान से याद करते हैं, उन का ख्याल मेरे सामने आता है। जो लोग मेरा ध्यान करते हैं, उनके

जो ख्याल की लहरें हैं, मेरे दिमाग़ तक आती हैं और अगर मैं ऊंचा न जाऊं तो यह सत्संगी मुझे मार देंगे। यह जितनी अज्ञानी मातायें आती हैं, मत्थे टेकती हैं ! अध्यात्मिकता के दृष्टि कोण से यह मेरे दुख का कारण हैं क्योंकि इन के जो संस्कार हैं यह मेरे मस्तिष्क पर आते हैं और अगर मैं वहीं ठहरा रहूं तो वे तो मुझे मार डालेंगे, बच नहीं सकता। इस वास्ते मैं किसी का गुरु नहीं बना। मेरा अनुभव सिद्ध करता है कि जिन्होंने गुरु बनके काम किया है वो अपने सिर पर बहुत कुछ पाप ले के गये।

कहते हैं कि ज्ञानी के प्रारब्ध कर्म नहीं बनते, इस का आशय यह है कि जिस को यह समझ आ गई हुई है, वो जो कुछ भी सोचेगा, करेगा, क्योंकि उस को पता है कि यह माया है, हैं नहीं उस का असर नहीं होगा, उसके कर्म नहीं बनेंगे, मगर जो पिछले किये हुए हैं वे उस को भुगतने पड़ेंगे। इस से बच नहीं सकते, मैंने यह समझा हुआ है।

तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा।
अबहुं मिला सो तबहूं मिलैगा, नहीं तो जयपुर बासा।

अब देखो यहां क्या लिखा हुआ है ? वो कहते

हैं शरीर छूटने के बाद लोग यह उमीद करें कि हम को मुक्ति मिल जाये, यह झूट है, क्यों ? जब तक यह समझ या ज्ञान जिस को इस ज़िन्दगी में नहीं हुआ वो मरने के बाद क्यों नहीं जा सकता। मैं आपको सांइन्स के आधार पर बताता हूं कि इस समय के वैज्ञानिकों ने यह साबित किया है कि जब इन्सान मरता है अन्तर से कोई चीज़ निकलती है, उस की फोटो ली गई। मरने वाले को तराजू (Scale) पर रखा गया, जब उसकी जान निकल गई तो कोई बीस ग्राम घटा, कोई दस ग्राम घटा, तो कोई पांच ग्राम घटा, आगे तो यह हिन्दुओं का ख्याल था कि सूक्ष्म शरीर जाता है, अब यह साइन्स ने साबत कर दिया कि कोई चीज़ हमारे अन्तर से निकल कर बाहर जाती है, उस का वज़न होता है, तो जो वज़नदार चीज़ होगी, उस को यह ज़मीन खैंचेगी। वो आदमी जिसको इस ज़िन्दगी में ज्ञान नहीं हुआ, कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है यह छाया है, माया है, यह है नहीं, जो कुछ शक्लें या रूप उसके अन्तर आयेंगे, राम आयेगा, कृष्ण आयेगा, देवी आयेगी, बेटा आयेगा चूंकि उस को ज्ञान नहीं है, यह उस को सत्य मानेगा।

जब वो मरेगा, उसे सत्य मानने के कारण, उसे का सूक्षम शरीर भारी होगा, जब वो शरीर से निकलेगा, वो परे जा ही नहीं सकता, लाख कोई कोशश करे। इस वास्ते ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है, यही हिन्दु शास्त्र कहते हैं। लोगों ने ज्ञान यह समझा हुआ है कि मैं खुदा हूं, यह ग़लत है। ज्ञान का अर्थ है कि मैं कौन हूं।

तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा।
अबहुं मिला सो तबहुं मिलेगा, नहीं तो जयपुर बासा।

मुझे यह विश्वास हो गया कि जिस आदमी को इस ज़िन्दगी में पूर्ण विश्वास नहीं हुआ कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है, शक्लें बनती हैं, जो कुछ बनता है यह वास्तव में हैं नहीं, बल्कि केवल Suggestions and inpressions हैं। यह वो हैं जैसे सिनेमा के अन्तर परदे के ऊपर शक्लें बनती हैं सब तमाशा होता है मगर वो असल में नहीं होती। जब तक किसी आदमी को यह विश्घास इस ज़िन्दगी में नहीं हुआ, यह दृढ़ निश्चय नहीं हुआ तुम्हारा फलक भी अगर चाहे या गुरु भी आ के तुम्हारी सहायता करना चाहे या खुदा भी करना चाहे तो जन्म मरण के इस चक्कर से बच

नहीं सकते, क्यों ? जो रूप बनाता है, क्योंकि उसका मन स्थूल चीज़ की रचना करता है इसलिए भारी होगा। यह तो अमूल है कि जो चीज़ भारी होगी उसको ज़मीन खैंचेगी। यह मेरे सामने छोटे से छोटा फूल है। मैं इसे ऊपर फैंकता हूं देखो, नीचे आया कि नहीं ! जो चीज़ भारी है ज़मीन उस को ऊपर नहीं जाने देगी बल्कि खैंच लेगी यह Fundamental Law है।

मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, आप बीती कह रहा हूं, मुझे भाषण देना नहीं आता, मैं अपने भाव को तुम लोगों को समझाने की कोशिश करता हूं। तो फिर क्या करना है तुमने ? जब तक तुम लोगों को यह विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम्हारे अन्तर फुरना फुरती, शक्लें आती हैं, विचार आते हैं यह वास्तव में हैं नहीं। एक सिनेमा का खेल है, उस ने लाख गुरु को धारण किया हुआ है, लाख जो मरज़ी किया हुआ है, उस को संसार के चक्कर से मुक्ति नहीं होगी, उस को दोबारा आना पड़ेगा। मुझे तो पूर्ण विश्वास और हर प्रकार से निश्चय हो गया है कि इन शक्लों को सत्य मानने वाला पार

नहीं जा सकता, तो कबीर साहिब ने सच कहा है।

जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फांसी न काटी, मुए मुक्ति की आसा।
तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा।
अबहुं मिला सो तबहुं मिलेगा, नहिं तो जयपुर बासा।

क्या मिलना है ? मैं कई बार सोचता हूं, मिलना है क्या ? जब यह ख्यालात विचार जो हमारे मन के अन्तर से निकलते हैं यह ख़तम हो जायेंगे, बाकी तुम्हारी अपनी ज़ात है, किसी ग़ैर चोज़ ने तो आके तुम को मिलना नहीं, मेरी समझ में यह बात आई है।

जमपुर क्या है ? जिस प्रकार की मानसिक आशायें और ख्यालात होते हैं, चूंकि उस को ज्ञान नहीं, वो उस को सत मानता है। तो जिस चीज़ को, जिस ख्याल को सत मानता है वो मरने के बाद फिर उसी ख्याल के मुताबिक दोबारा मन्म लेगा। नर्क और स्वर्ग क्या है ? वो ख्यालात या विचार जो गंदे हैं उन की शक्लें बन के आयेंगी, कहीं सांप, कहीं बिच्छू, कहीं कुंए में डूबना आदि-आदि, और अगर अच्छे ख्यालात हैं तो देवता, राम, कृष्ण या गुरु शक्लें बना के सामने आयेंगे :-

दूर दूर ढूंढै मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा।
साध संत की करै न बंदगी, कटै करम की फांसा।

दुनियां ने क्या समझा हुआ है, साधु की बंदगी क्या है ? मैं बंदगी का अर्थ समझता हूं कि उस की बात को सुन के, समझ के, उस पर अमल करना और विश्वास करना, यह है बंदगी। साधु वो है जो मन से साधन करता है। आप लोग साधु थे, आप लोगों ने अपना अनुभव मुझे बताया, किसी ने मेरा रूप देखा, मन से बातें की और मैं नहीं होता, तो मेरी ज़िन्दगी का लखता बदल गया, मैं खुद बदल गया, मेरा खून बदल गया, मेरा सब कुछ बदल गया। मेरे अन्तर भी जो कुछ आता है वो बाहर से तो कोई नहीं आता, वो वही कुछ आता है जो मेरे मन पर संस्कार पड़े हुए हैं और सो कुछ नहीं ! तो फिर जब यह ज्ञान हो गया तो मैं अगर चाहूं अपनी मरज़ी से फंस जाऊं तो यह और बात है, अगर निकलना चाहूं तो मुझे यह ज्ञान ले जायेगा। मेरे रूप जितने तुम्हारे अन्तर प्रकट होते हैं यह हैं नहीं, यह ज्ञान तुम को मुक्ति देगा न कि फकीर चंद, महर्षि जी, या कोई और गुरु। तुम को मुक्ति फकीर चन्द या महर्षि

जी ने नहीं देनी, तुम को मुक्ति मिलनी है इस समझ से, इस ज्ञान से कि तुम्हारे अन्तर से जो फुरना फुरती है यह वास्तव में तुम्हारे मन के रूप हैं। जब तक तुम अपने मन से इन रूपों के साथ लगे हुये हो, यह भूल जाओ कि तुम आवागवन से बच जाओगे, यही बात सन्त मत में लिखी हुई है और यही बात राय सालिग राम साहिब जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है, वो कह गये हैं कि अन्त समय में फिल्म चलती है, गुरु भी आ जायेगा जिस से नाम लिया हुआ है, कुछ दिनों ऊपर रहोगे, फिर जब कोई सन्त सतगुरु आयेगा, तुम को चोला मिलेगा और बाकी की कमाई पूरी करोगे।

दूर दूर ढूंढ़ै मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा।
साध सन्त की करै न बन्दगी, कटै करम की फासा।

जो इन्सान मालिक को दूर समझेगा वो तो दौड़ेगा बाहर, इस वास्ते बार बार कहा जाता है कि किसी कामल सुलझे हुए इन्सान की संगत करो ताकि तुम को सच्चा ज्ञान मिल जावे। कर्म नहीं कटेंगे और किसी के भी नहीं कटेंगे जब तक मरते समय

तुमको यह विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम्हारे सामने आया, वो माया है। यही भरम है। यही सनातन धर्म समझाता है कि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिलेगी, लोगों ने ग़लती से यह मान लिया कि ज्ञान के अर्थ हैं अहंब्रह्म, मैं खुदा हो गया, मैं वो हूं। ज्ञान यही है कि जो कुछ तुम्हारे सामने फुरना फुरती है, ख्याल उठते हैं, जिन से तुम प्रेम करते हो, वो हैं क्या ? वो माया है, है नहीं ! जिस के मन में यह अन्त समय ज्ञान आ गया कि जो कुछ मेरे सामने फुरता है यह माया है, फिर उस का जो अपना Self है वो कहां जायेगा, वो प्रकाश और शब्द में जायेगा या यूं समझो कि वो पारब्रह्म और शब्दब्रह्म में चला जायेगा, चूंकी उस का अपना, निकलने वाली रूह का अपना रूप प्रकाश होगा या शब्द होगा वो उस का प्रकाश अर्थात आत्मा बाहर के प्रकाश रूपी परमात्मा में मिल जायेगा और शब्द की वजह से वो शब्द ब्रह्म के लोक में चला जायेगा।

सत्त गहे सतगुरु को चीन्है, सत नाम बिसवासा।
कहें कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।

सतगुरु को चीन्हे ! तुम ने तो यह समझा हुआ है कि तुम्हारा सत गुरु फकीर चंद है जिस के एक लड़का है, एक लकड़ी है, रिटायर हुआ हुआ है, तुम तो गुरु सतगुरु को यह समझते हो दीवानो ! सतगुरु नाम तो सच्चे ज्ञान, सच्ची समझ, सच्चे विवेक का है। जब तक कोई आदमी सत्संग में जा कर सच्चा ज्ञान, सच्चा विवेक नहीं हासल करता, उस का बन्धन नहीं टूट सकता यह बिल्कुल सच्ची बात है। वो कहते हैं पहले सत गुरु को चीन्हे। कबीर साहिब ने भी यही कहा है किसी से पूछो तुम्हारा गुरु कौन ? बाबा सावन सिंह, तेरा गुरु कौन ? फकीर चन्द, तेरा गुरु कौन ? निरंकारी ! अरे यह तो जिन सन्तों ने यह गुरु मत चलाया वह तो कह गये।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
दुखी होये संसार में आगे जम का फंद।

इन संत मत वालों ने हमारी आखों पर पटियां डाली हुई हैं कि हमारे जाल से निकल न जायें। यह एक आदमी कहता है मेरा गुरु फकीर चन्द है किसी आदमी को गुरु मानता है, अगर संतों का मार्ग है तो वह तो कहते है।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।

तो जो यह समझता है कि मेरा गुरु फकीर चन्द है, बाबा नानक है, फलाना है फलाना है वह तो कह गये कबीर साहिब के कहने के मुताबक वह तो अन्धा हुआ। यह है सच्चाई, कोई सच्ची बात सुनने को तैयार नहीं। मगर है यह सच्चाई।

सत्त गहै सतगुरु को चीन्है, सत नाम विसवासा।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।

मुझे नहीं पता कबीर साहिब का सत नाम क्या है, मैंने क्या समझा ? जब से मुझे यह पता चला कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जाता है और मैं नहीं होता तो वो जो मुझे ज्ञान हो गया है उस का नाम है सतगुरु, वो जो ज्ञान मुझे हुआ, वो समझ मुझे आई जो विचार पैदा हुआ था, कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है वो माया है, उस समझ का नाम सतगुरु है। तो इससे जब दुनियां को छोड़ जाते हैं, मन के चक्कर से, दसवें द्वार से आगे चले जाते हैं तो फिर क्या रह जाता है ? तुम्हारा अपना ही चैतन्य स्वरूप है। चैतन्य स्वरूप तुम हो, जिस को तुम ही जानते हो, मैं ब्यान नहीं कर सकता, अगर

मैं ब्यान करना चाहूं तो कर नहीं सकूंगा, क्योंकि तुम्हारी अपनी रहनी है, अपनी रहुनी में रहो, तुम को पता लगेगा तुम कौन हो, तुम्हारी हालत क्या है। जब तक यह विश्वास नहीं है तब तक आवागमन नहीं छूटता।

सत्त गहै सतगुरु को चीन्हे सत नाम बिसवासा।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।

वो सत क्या है जो तुम ने लेना है? अरे वो सत है, हमारी अपनी ही ज़ात, हमारा अपना ही आप, क्योंकि वो जो कुछ हमारे अन्तर से निकलता है वो तो सावत हो गया, वो माया है, वो है नहीं, तो जिस से वो निकलता है, जिस के आधार पर वो रहता है वो है क्या? वो सत है वो तुम हो, तुम्हारी ज़ात है। तुम्हारा अपना आप सत है। अपने आप को गहना, अपने आप में ठहरना, अपने आप में रहना, यह है सच्चाई, मगर वहां रहना कोई खाला जी का घर नहीं! मैं जानता हूं, मगर फिर भी कभी कभी ऐसा गिरता हूं जब सत्गुरु भूल जाता है। सतगुरु नाम है ज्ञान का।

सत्त गहै सतगुरु को चीन्है सत नाम विसवासा।
कहै कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।

अब देखो ! मैं इस काम को करने से सुखी नहीं हूं, फंसा हुआ गले पड़ा ढोल बजाता हूं। तबीयत भर गई बात समझ में आ गई। दूसरे को कहता हूं तो वो यह समझना नहीं चाहता, तो मैं क्या करूं।

सत्त गहै सतगुरु को चीन्है सत नाम बिसवासा।
कहै कबी साधन हितकारी हम साधन के दासा।

यह तो कबीर को पता होगा उस का क्या मतलब है। मैंने उमर खो दी संतमत में, मैं एक ब्रह्मण के घर पैदा हुआ हुआ आदमी, राम, कृष्ण, देवी देवता को मानने वाला, किसमत मेरी अच्छी या बुरी, मुझ को दाता के चरणों में ले गई उन्होंने संत मत दिया, इन का खण्डन सुनके कौन ब्रह्मण है जो बरदाश्त कर सकता है, तभी तो यह आदमी कबीर साहिब को गालियां निकालते है। मगर मैं मजबूर था, मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते सच्चा हो के चलूंगा, जो कुछ मेरा अनुभव होगा बता जाऊंगा। आज मैं कहता हूं कि जो कुछ संतों ने कहा है यह सोलह आने सत है। मगर भाई ! मेरी उमर गुजर

गई मैं भी अभी तक कभी कभी गिर जाता हूं। कब गिरता हूं जबसतगुरु को भूल जाता हूं। सत गुरु कौन है ? सच्चा ज्ञान, सच्चा अनुभव, वो सच्चा ज्ञान सच्चा अनुभव जो मुझे मिला। ऐ मेरी बहनो, मेरे दोस्तो, मेरे भाईयो, मेरे बजुर्गों वो क्या मिला ? कि हमारे मन के अन्तर जितने ख्यालात फुरेंगे यह माया है, जो इस मन के ज्यालात से प्रेम करने वाला होगा, उस का सूक्षम शरीर भारी होगा वो जब मरेगा, उस का वज़न होगा, चाहे कितने ही Grams हो, ज़मीन की कशिश उस को खैंचेगी। जब तक वो अपने ख्याल से जुदा नहीं है, उस की मोक्ष नहीं हो सकती, यह मेरे जीवन का तजुर्बा है, अनुभव है। यह मैं सोलह आने अपनी आत्मा से सत कहता हूं, इस में कोई झूठ नहीं धोका नहीं फरेब नहीं। जो आदमी इस जन्म मरन के चक्कर से बचना चाहता है उस को तो जब तक यह ज्ञान नहीं, वो पार नहीं जायेगा।

तो आप लोग आ जाते हैं मैंने जो कुछ कहा है सोलह आने सत कहा है। जो तो आवागमन से पार होना चाहते हैं उन के लिये कह दिया गया है, रह गई तुम्हारी दुनियां, उस के लिये मैं हमेशा कहता हूं

शिव सकल्पं अस्तु ख्याल अच्छे रखो, अपनी दुनियां अच्छी बना लो प्रेम रखो, परोपकार करो, किसी दुखिये की सहायता करो, किसी का भला करो, आपस में प्रेम से रहो, अपने मन की दुनियां अच्छी बना लो।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक २-१०-७७

धन्य धन्य गुरु परम स्नेही, धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भवभय मेटन हारी।
लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहचाने॥
अगुन सगुन के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रुप अरूप के परे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया॥
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा।
मन बानी की गम नहीं तुम में, सब में सबसे न्यारा॥
क्या कहूं करूं तुम्हारी अस्तुति, अजर अमर अविनासी।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धन सुख रासी॥
गो गोचर जहां लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा॥
तत्व अतत्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई।
सन्त कहें तुम शब्द रुप हो, और अशब्द गति सोई॥
ऊंची दृष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे।

भेद पाय शरणागत आवे, अवागवन मिटावें ॥
दया करो करूणा चित लाओ, दो मोहिभक्ति विवेका ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूं शब्द मिल एका ॥

राधास्वामी ! सन्त की बानी सन्त ही समझता है क्यों कि जिस पर बीतती है वह ही समझ सकता है । सन्त या कुतब वो है जो अपने आप में रहता है, अपने आप को किसी दूसरी चीज़ के अधीन नहीं करता । यह बानी आगे भी सत्संग में पढ़ी जाती थी मगर मेरा कभी इस की तरफ ख्याल नहीं गया था, मैं मालिक को मिलने के लिये निकला था, एक दृश्य द्वारा दाता दयाल जी महाराज के चरणों में गया, उन्हों ने गुरु मत दे दिया । अब इस शब्द में वह गुरु को मालिक का रूप बताते हैं, वह कहते हैं :-

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटन हारी ॥

दाता दयाल ने गुरु की इतनी स्तुति की है, सवाल यह है कि गुरु देता क्या है ? जो लोग यह समझते हैं कि गुरु पुत्र, दौलत, इज्जत और सेहत देता है, उन की विवेक बुद्धि अभी जाग्रत नहीं हुई । यह पुत्र, इज्जत, दौलत, जो कुछ भी किसी को मिलता

हैं, यह उस के अपने विश्वास या अपने कर्मों की वजह से मिलता है। अगर विश्वास है सच्ची आस है तो यह चीज़ें मिल सकती हैं, गुरु क्या देता है ? वो भव भय मेटनहारी है। जिन्दगी में जो हम को डर लगता है, इस दुनियां में आ कर जिस चीज़ से हम घबराते हैं, उस घबराहट को मेट देता है, यह है गुरु की स्तुति :-

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर ! तू अपने आप को सन्त सतगुरु कहता है, पहले यह बताओ क्या तू किसी का भव भय मेट सकता है ? यह एक प्रश्न है पुरुषोत्तम दास ! चार दिन की ज़िन्दगी है, मैं अपनी आत्मा को सच्चा रखना चाहता हूं। जिस तरह मेरा भव भय मिटा वही रास्ता मैं तुम को बता सकता हूं। जब से तुम लोगों से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जाता है, मैं नहीं होता, मुझे कोई पता नहीं होता तो मुझे यकीन हो गया कि लोगों के अन्तर जो फकीर चन्द बनता है वो उन का अपना ही मन है, फकीर चन्द नहीं जाता, ऐसे ही मुझ को जो कुछ मेरे मन के अन्तर था वह मालूम हो गया कि मेरी अपनी कल्पना

थी, कोई और नहीं था। तो जब से यह ख्याल हुआ कि मन के अन्दर यह जो कुछ भी पैदा होता है यह दर असल में है कुछ नहीं केवल संस्कार हैं, जब इन्सान इन को छोड़ जाता है तो भव भय तो अपने आप ही चला गया! मन के ख्यालात को ही जब समझ लिया कि इस में हकीकत नहीं है, यह फ़र्ज़ी है, यह ख्याली है, मन के जितने ख्यालात होते हैं, इन को यह समझा कि वह हैं नहीं और दरअसल हैं भी नहीं! हम अपनी कल्पना से दुख सुख बना लेते हैं, अपना ख्याल है अपनी कल्पना है। हम मन के साथ फंसे हुए हैं। जब यह ज्ञान आदमी को हो गया भव भय कहां रहा! क्या रह सकता है? नहीं। कितनी आसान बात है? मगर यह समझ में नहीं आती!

मेरा तो भव भय मिटाया तुम लोगों ने, अगर मैं ने गुरु की स्तुति करनी हो तो मैं तुम लोगों की स्तुति करूं। वही फ़कीर चन्द था जो दाता दयाल जी महाराज के पीछे फिरता, दुखी होता चिट्ठियां लिखता और आर्तियां करता। जब मैं आर्तियां करता था तो उस वक्त मेरा भव भय नहीं मिटा था भव भय तुम लोगों ने मेरा मिटाया, केवल इस ख्याल

ने कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे यकीन हो गया कि मेरे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है, कल्पना है संस्कार है जो बैठा हुआ है वो नज़र आता है, तो मन के चक्कर में न आना ही भव भय मेटना है।

धन्य धन्य गुरु परम स्नेही धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला भव भय मेटन हारी॥

अब जब शब्द पढ़ा गया तो दिल में ख्याल आया क्यों भई! तेरा भव भय मिट गया? क्या तू दूसरे का भव भय मिटा सकता है? अगर मैं नहीं मिटा सकता तो जो कुछ भी मैं कहता हूं या गुरुवाई करता हूं, मुझ पर धिक्कार है, मैं कुकर्म करता हूं, कुदरत मुझे धोखे की सज़ा देगी, कोई ताकत मुझे बचा नहीं सकती!

जब मैं एक काम करता हूं, और खुद मेरे अन्तर यकीन नहीं है, पाखण्ड करता हूं। तो क्या धोखा नहीं तो क्या है? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, मेरा अब चले चलाओ का वक्त है I want to keep my Conscence clean तू ने अपने आप को सन्त सतगुरु कहा है। तू किसी का भव भय मिटा सकता

है ? मगर आप लोग मेरे पास आते हैं तो भव भय मिटाने के लिये नहीं आते । आप का भव भय क्यों नहीं मिटता ? क्यों कि आप लोग तो मन के दुख सुख से निकलना ही नहीं चाहते, इस में आनन्द लेते हो । इस वास्ते वो गुरु जो भव भय मिटाता है वो आप के काम का नहीं है । जो दुनियां चाहते हैं उन के लिये भव भय से निकलने का स्वाल ही पैदा नहीं होता, दुनियां के लिये और बात है वह यह है कि तुम्हारे ख्याल में ताकत है, अपने ख्याल को पक्का कर लो तो तुम्हारे काम हो जावेंगे । तुम दुनियां दार हो, दुनियां चाहते हो । मैं अपनी डयूटी पूरी कर जाना चाहता हूं । ऐ दाता ! आप ने काम दिया था पता नहीं मैं ठीक हूं या ग़लत, मेरी नीयत साफ़ है । अगर दुनियां चाहते हो तो भाई ! यह तो तुम्हारे अपने ख्याल से, अपने कर्म से मिलेगी । जैसा तुम्हारा ख्याल है वैसा तुम्हारा हाल है । अपने ख्याल को ठीक रखो, और अगर तुम ४२० करते हो, दूसरों का बुरा चाहते हो, फिर यह उमीद करते हो कि तुम्हारा भला हो यह नहीं हो सकता, न कभी हुआ न कभी होगा । इस भरोसे में मत रहना कि तुम फकीर चन्द

के चेले हो, तुम ४२० करते हो तो बाबा फकीर या राम तुम को बचा देगा यह झूट है :—

लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने ।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें ज्ञानी नहीं पहचाने ।।

अब देखो ! यह शब्द है पुरुषोत्तम दास ! तू मेरा मित्र है, मेरा सारा जीवन इन बानियों के खब्त में चला गया क्या यह ठीक लिखा हुआ है ? अगर नहीं है तो फिर अगर मैं इस पन्थ का अनुसरन करता हूं तो मैं दोषी हूं ।

क्या यह ठीक है ? हां, ऋषि, मुनि योगी जो भी करते है अपने मन से करते हैं । मन तो ऐक कल्पना है जो कुछ भी हम अपनी कल्पना से अपने विचार से, अपने ख्याल से जानने का यत्न करते हैं वो ठीक नहीं होगा ! जब से तुम लोगों से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, तो मैं अब मन को छोड़ जाता हूं । मेरा इस वक्त का साधन मन का नहीं है । रूप रंग शक्लें सब छूट जाती हैं, उस से आगे एक अवस्था आती है अब अगर मैं उस को ब्यान करना चाहूं तो कैसे करूं ? जब तक आदमी खुद साधन न करे और उस को अनुभव न करे, तो

मेरे शब्द कुछ अर्थ नहीं रखते, जैसे गुड़ खाते हो, तुम उस के स्वाद को बताना चाहो तो क्या तुम बता सकते हो ? तुम नहीं बता सकते, यही कहोगे मीठा मीठा मीठा जिस ने मीठा खाया है वो तो समझ सकता है कि मीठा का क्या मतलब है। ऐसे ही वो तो ऐक अवस्था है। मैं अपनी आत्मा को सतसंग करा रहा हूं, तुम को नहीं करा रहा !

मैं इस पन्थ में आया था, इस पन्थ ने मेरे बुजुरगों पराशर का, व्यास का, राम का, कृष्ण का, सब का खण्डन किया हुआ था, कौन इन्सान है जो अपने बुजुरगों का खण्डन सुन सकता है ? दाता दयाल से तो मेरा विश्वास टूटा नहीं, बात मेरी समझ में नहीं आती थी, तो मैं न प्रण किया था कि मैं इस रास्ते सच्चा हो कर चलूंगा और अपना अनुभव कह जाऊंगा। आज मैं कहता हूं कि जो कुछ स्वामी जी ने कहा या सन्त कह गये वो ठीक है, मगर इस को समझने वाला हर ऐक आदमी नहीं है।

जब मन रूप रंग सब को छोड़ जाता है हमारा अपना Self बाकी रह जाता है उस अवस्था उस हालत को मैं जानता हूं क्योंकि मैं वहां रहता हूं,

उस हालत में जब मन ही न रहा तो उसे कौन जान सकता है ? जो मन को छोड़ कर अपने अन्तर में उस जगह चला जाये जहां मन काम नहीं करता, जहां फुरना नहीं फुरती, कोई रूप नहीं, वो जो अवस्था है वो है अगम अपार अमाया और अगोचर। मगर कौन देता है ? यह गुरु बताता है, इस वास्ते गुरु की महिमा है। दुनियां की चीजों के लिये, दुनियां में समृद्धशाली बनने के लिये भी तरीका बाहर का गुरु बताता है, उस के लिये यह षट चक्रों का और कमलों का साधन होता है। खास खास चक्र पर साधन करने से खास खास किसम की सांसारिक बासनायें, मानसिक आनन्द या अत्मिक आनन्द आदमी को मिलते हैं, मगर इन दर्जों पर साधन करने से भव का भय नहीं जाता या आदमी भवसागर से पार नहीं जा सकता क्योंकि यह शारीरिक सुख, मानसिक सुख, अत्मिक सुख आदि प्राकृतिक हैं। आदमी की प्रकृति जिस जिस किसम की होती है, उस के अनुसार हर जीव को यहां साधन करने से यह चीजें मिल जाती है। यह दुनियां की चीजें हैं, इस का कोई सम्बन्ध सन्तमत के साथ नहीं है।

अगुण सुगुन के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रूप अरूप के वरे परे तुम. नहीं प्रकाश नहीं छाया॥

यह ठीक है. क्यों ? मेरे साथ बीती, यह गुरु देता है, इस को मैं समझता हूं। मैं धर्म से कहता हूं सत्संगियो ! मेरे पास तुम को देने के लिये कुछ नहीं है। मुझ पर तो दाता दयाल जी महाराज ने इतना एहसान नहीं किया जितना तुम लोगों ने किया। दाता दयाल ने मुझ को वहां तक पहुंचाने के लिये केवल खेल खेला। इस चीज को प्राप्त करने के लिये उन्होंने यह उपाय बताया और यह काम मुझे दिया उन की आज्ञा का पालन करने से मुझ को यह चीज़ मिली। पिछले समय में यह साफ बयानी करने का दसतूर नहीं था किसी खास आदमी को कान में बता दिया जाता था, जैसे कबीर साहिब ने कह दिया :-

धर्म दास तोहे लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई॥

मेरे जिम्मे चूंकि जगत कल्याण की डयूटी थी, मैं ने यह बात खोल दी, कि कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता। यह वो संस्कार हैं जो आदमी के

अन्तर फुरते हैं बिल्कुल सच्ची बात कहता हूं, केवल ऐक इसी बात को परदे में रख कर इन मज़हबों ने, पन्थों ने, गुरुओं ने हम को मूर्ख बना कर लूटा है। और लुत्फ यह है कि हम लुटने में मज़ा लेते हैं, लुटने में हम को आनन्द मिलता है :-

सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत के पारा।
मन बानी की गम नहीं तुम में, सबमें सब से न्यारा॥

जब मैं वहां चला जाता हूं वहां मन नहीं है, वानी नहीं है. आप इस को समझ नहीं सकते, क्यों-कि आप तो रूपों में फंसे हुऐ हो, कोई राम के रूप के साथ फंसा हुआ है, कोई कृष्ण के रूप के साथ फंसा हुआ है तो कोई किसी के रूप के साथ, मैं खुद रूपों में फंसा रहा, मगर मेरे दिल में अपने घर जाने का जज़्बा था मैं देखना चाहता था कि राधा स्वामी मत को क्या अधिकार है जिन्होंने मेरे बुज़ुर्गों का खण्डन किया, मेरे लिये इन का खण्डन मेरी छाती पर छुरियां चलती थी, मगर दाता से मेरा विश्वास टूटा नहीं। मैं ने बड़ी सच्चाई से गुरु के साथ प्रेम किया, सिवाये छोटी उमर में शादी हुई, मैं ने कोई पाप नहीं किया, न धोखा किया और न किसी

से फ़रेब किया । अब मैं कहता हूं कि जो कुछ यह लिखा है यह ठीक है ।

क्या कह करूं तुम्हारी अस्तुती अजर अमर अविनासी ।
निरालम्ब सब के आधारा चेतन धन सुख रासी ॥
गो गोचर जहां लग मन जाई सो नहीं देम तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई वरने पारा ॥

यह तो तुलसीदास जी भी कह गये रामायण में :-

गो गोचर जहां लग मन जाई ।
माया कृत जानियो भाई ॥

अब तुलसी दास जी तो कह गये मगर जिनने रामायण के पढ़ने वाले हैं, सारे अपने मन से ही तो राम को बना बना के पूजते हैं । तुलसी दास जी के कहने पर कौन चलता है ? लोग रामायण को पढ़ते हैं, इस में जो लिखा हुआ है, उस को कोई नहीं देखता । अब दुसहरा आयेगा राम का रूप, झांकियें बना कर थेटर करेंगे वो समझते हैं कि हम राम के भक्त हो गये । जो कुछ तुलसी दास जी कह गये उस को तो कोई सुनता मानता नहीं है वो तो कह गये :-

गो गोचर जहां लग मन जाई ।
माया कृत जानियो भाई ॥

जो आदमी अपने अन्तर में राम को बना कर के उस के साथ बातें करता है वो माया नहीं तो क्या है मगर हम रामायण को मानते हैं उस में जो लिखा हुआ है, उस पर कोई विचार नहीं करता और अमल नहीं करता। यह जितने हम मज़हब वाले हैं यह अज्ञान में हैं, दाता दयाल जी महाराज ने कहा है :—

गो गोचर जहां लग मन जाई सो नहीं देस हमारा।
माया काल के परे ठिकाना क्या कोई बरने पारा॥

क्या यह ठीक लिखा है ? ठीक है। माया काल है क्या ? जो असल चीज़ है वो प्रकाश से परे रहती है वो शब्द भी नहीं है, वो जो अवस्था है वो है हमारा रूप, वही है मालिके कुल, जब उस जगह पर जाते हैं उस का पता नहीं मिलता, हम सब उस के अंश हैं मगर हम सब इस माया में फंसे हुए हैं। गुरु आता है वो चेतावनी दे जाता है, इतना ही खेल है, इतना ही मज़हब है, मगर हम लोग जो आते हैं चेतावनी के लिये आते हैं ? कोई आता है लड़का नहीं हैं, कोई कहता है लड़की की शादी के लिये पैसा नहीं है, कोई आता है लड़का गूंगा है, हम तो इसी चक्कर में माया में फिरते हैं :—

तत्व अतत्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई।
सन्त कहे तुम शब्द रूप हो और अशब्द गति सोई॥
ऊंची दृष्टि करे जो प्राणी. सार भेद कुछ पावे।
भेद पाय शारनागत् आवे. आवागमन मिटावे॥

कब ? जब ऊंची दृष्टि हो अर्थात् अपने विचार को वसीह करे, फिर उस को पता लगेगा कि हां यह ठीक है। मैं ने अपने विचार को वसीह किया, जब तुम से पता लगा तो मैं सोचने के लिये मजबूर हो गया कि वो जो प्रकाश को देखती है, वो क्या चीज़ है। ऐसे अपने ख्याल को जो ऊंचा करता है, उस को जो ऊंचा करता है, उस को यह शान्ति मिलती है, दूसरे को नहीं मिलती :—

ऊंची दृष्टि करे जो प्राणी सार भेद कुछ पावे।
भेद पाय शारणागत् आवे आवागमन मिटावे॥

अब देखो, मैं कहा करता हूं कि मेरा मार्ग शारनागत्म रह गया, मैं सब फुछ छोड़ गया, सिवाये शारनागत्म के। क्यों ? ऊपर जाकर समझ आई कि मेरा रूप वह है जो प्रकाश को देखता है और शब्द को सुनता है मगर वो है क्या ? इस का पता नहीं मिलता ! निचली (Stages) तो खत्म हो गईं,

ज़िन्दगी कैसे गुज़ारूं ? अपने आप को उस के अर्पण करता रहता हूं, सार भेद मिल गया, क्या सार भेद मिला ? उस की लीला बेअन्त है, उस की इच्छा है जो कुछ हो रहा है वो ठीक हो रहा है ।

आवागमन कैसे मिटेगी ? आवागमन तो तब होगी, जब हमारी उस चीज़ का जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, का सम्बन्ध हमारे मन की फुरनाओं और बासनाओं के साथ रहेगा, तभी तो मरने के बाद नाना प्रकार की योनियों में आता रहेगा । भेद से पता ही लग गया कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरना फुरती है यह केवल Suggestions aud impressions हैं. यह हैं नहीं माया है, क्योंकि उस का सम्बन्ध किसी एसी चीज़ के साथ नहीं है, जो उस के अन्तर से मन बताना है तो फिर वो किसी योनी में आ नहीं सकता ।

एक तत्व है उस में हरकत होती है । उस से जो चीज़ पैदा हो जाती है, इस का ज्ञान तो हो गया आगे कुछ मिलता नहीं, ज़िन्दगी क्या है, लब खुले और बन्द हुए यह राज़े ज़िन्गगानी है । अब ज़िन्दगी कैसे गुज़ारू ? शरनागतम् ! अपने आप को उसके हवाले

कर दे तेरी इच्छा है जो मरज़ी है कर, इतनी समझ के बाद शरनागत हुआ। मैं शरनागत क्यों हुआ सारा भेद पा लिया, वाह दाता वाह ! क्या कुछ लिख गये, तेरी इस बात को कौन समझेगा, कि भेद पावे शरनागत् आवे। जो कुछ मैं कहा करता हूं वहीं आया कि उमर गुजर गई अब शरनागत पर आया।

दया करो करुना चित्त लाओ दो मोहे भक्ती ववेका।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी रहुं शब्द मिल ऐक।

दाता दलाल का दूसरा एक शब्द है।

शब्द भेद बिन सत्गुरु, क्या कोई जाने।
अनहद धुन घट में सुने, सुन कर माने।
जब घट में वासा नहीं क्यों समझ में आवे।
अपने कानों नहीं सुना निश्चय क्यों आवे।
ईश्वर को देखा नहीं भक्ति क्या करना।
बिन देखे जाने बिना क्यों पच मरना।
बिन देखे नहीं नाम ले नहीं काजे परीति।
यह सिद्धान्त अमूल्य है तज दे विपरीति
माला फेरत जुग भया, नहीं मिला ठिकाना।
परिचय ईश्वर से नहीं, नहीं उस को जाना।
कर का मनका डाल कर ले मन की माला।
जब माला को फेरिये, तब घट उजयाला।

मुख से नाम न लीजिये, जपिये बिन बानी।
सुनिये घट का शब्द, हो कर निरबानी।

मैं हैरान हूं मास्टर मोहन लाल! क्या कुछ इस शब्द में लिखा हुआ है, जो कुछ मैं समझता हूं क्या वो आप समझ सकेंगे। वो कहते हैं निरबानी होकर फिर घट का शब्द सुनो हैरानगी की बात है! अब देखो! यह नुक्ता है, मैं समझता हूं, आप लोग नहीं समझेंगे, आप के बस की बात नहीं।

अब मैं लाख कोशश करता हूं न घंटा सुन सकता हूं न मृदंग न रारंग न सारंग कुछ नहों, केवल नाम का आखरी शब्द सुनता हूं जो अटूट है, उस को न मैं घंटा कह सकता हूं न बीन कह सकता हूं, पहिले मैंने सारे सुने, अब वो क्यों नहीं सुनाई देते, यह मेरे दिल में ऐक स्वाल है, जो मैं अपने आप से पूछता हूं। इस वास्ते नहीं सुनाई देते कि यह जितने अन्तर के शब्द हैं, जिस जिस प्रकार की तुम्हारी मन की और शरीर की प्रकृति है उस के मुताविक यह शब्द होंगे। जैसे घटा क्यों बजता है, रारंग सारंग क्यों होता है वो मन माया और काल का चक्कर है। भवंर गुफा से ले कर नीचे तक सब काल मत है और त्रिकुटि

से नीचे जितने शब्द हैं यह सब माया मत है। मैंने एक पुस्तक लिखी है पांच नाम की व्याख्या, उस में मैंने साइन्स और सन्तों के असूल के मुताबिक यह सिद्ध किया है कि बाजे अन्तर में क्यों बजते हैं। जिस किसम के इन्सान के ख्यालात हैं। विचार हैं, यह उसके मुताबिक होते हैं। जब आदमी को यह ज्ञान हो जाता है कि सारा मन का झगड़ा है, मन के खेल हैं चूंकि उस को ज्ञान हो गया है, फिर वो यह शब्द नहीं सुन सकता, उस को निचले शब्द कोई सुनाई नहीं देंगे, इच्छायें नहीं होंगी, तो जब वासनायें न रहेंगी वो क्या बनेगा ? वो निरबानी हो जायेगा, फिर वो आखरी शब्द सुनेगा।

मुख से नाम न लीजिये जपिये बिन बानी।
सुनिये घट का शब्द हो कर निरबानी।

अब मैं आखरी शब्द सुनता हूं, निचले शब्द सब छूट गये। सन्त इस को सार शब्द कहते हैं। कबीर साहिब ने उस को शब्द वदेही कहा है। निचले जितने शब्द हैं वो प्रकृति की वजह से पैदा होते हैं, इसलिये वो शब्द वदेही नहीं हैं, कोशिश करता हूं मगर निचले शब्द नहीं आते, ऊपर वाले आते हैं, तो

दाता ने जो कहा वो अन्तिम अनहद शब्द है बाकी जितने शब्द हैं, यह शब्द की परख नहीं है।

हरी से मत कर हित, करो हरिजन सेवा।
हरि जन के सत्संग से मिटे भव भेवा।
हरिजन में हरि रहित हैं, हरि जन के घट में।
जन्म बिगाड़ा भूल कर निष्फल खट पट में॥
सुगम सहज जो बात थी उस को नहीं जाना।
कठिन बनाया काम को हरि नहीं पहचाना॥
राधा स्वामी की दया घट भीतर बासा।
घट के अन्दर परख नित् साहिब है साथा॥

मुझे नहीं पता कि घट की परख से दाता दयाल जी महाराज का क्या मतलब है, मैं ने क्या परख की? बस यही कि मेरे अन्तर में प्रकाश का और शब्द का जो साक्षी है वो और चीज़ है और जो कुछ वह देखता है व सुनता है वो और चीज़ है। मैं ने तो यह परख की, इस समझ से फिर घट के भीतर बासा किस को मिला? वो जो सब से ऊंचो चीज़ है, सब का साक्षी है, उस का अपने आप में ठहर कर अपने मन के जितने भाव बिचार आदि उठते हैं, इन में न फंसना और अपने आप में ठहरना ही बासा है।

जिन को संसार की आशायें हैं, उन के लिये यह संतमत बिलकुल है ही नहीं, उन के लिये निचले साधन हैं, सहस दल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महा सुन्न या खट चक्करों का साधन, यह उस की मानसिक आत्मिक और शारीरिक ज़िन्दगी को बेहतर बना देंगे और वो दूसरों की निसबत अपने जीवन में कामयाब रहेंगे। माया चक्कर में स्थूल पदार्थों का लाभ होता है जैसे सेहत व दुनियां की उन्नती, काल के चक्कर में मन के विचारों का फायदा होता है। मन की हालत आनन्दायक होती है, खुशी बेफिक्री आती है। आत्मा के चक्कर में आनन्द आ जाता है, सत चित आनन्द, एक मस्ती जिसम की, एक मन की एकाग्रता से मस्ती, एक प्रकाश देखने से जो आनन्द होता है वो आत्मा की मस्ती है। हमारा जो घर है उस सत चित आनन्द से परे है, वो हमारा Self है। शब्द भेद क्या है यह आज आप को बता दिया।

सबको राधास्वामी !

पत्थर के मकानों में पत्थर के आदमी

लेखक:-सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़

राधास्वामी। हां हां लत्थर के मकानों में पत्थर के आदमी। यह बात बिलकुल ठीक है। शायद आप प्रश्न करें ऐसा दृश्य कहां पर है इसको देखने के लिए दृष्टि चाहिए, आंख चाहिए, ढूडने का समय नहीं है। दुनियां के हर भाग में, हर नगर में और गांव गांव में आपको सुन्दर मकान, संगेमरमर के ताज महल लाल पत्थर के किले और महल, बड़े २ हस्पताल और सुन्दर मन्दिर देखने मैं आयेंगे लेकिन वहां मानवता का नाम निशान नहीं है क्यों कि इनमें पत्थर के आदमी रहते हैं जिनके दिल पत्थर के, सोना पत्थर का और जवान पत्थर की है।

जिस आदमी की ज़बान कैंची की तरह चलती हो, दूसरों के दिलों को छलनी करती जाती हो, जो आदमी जालम हो दूसरे के कष्ट को देखकर टस से मस नहीं होता, दूसरों के कष्ट का इसको भान ही

नहीं है, लापरवाह है, जिसने कभी कोई नेक काम नहीं किया किसीपर कभी कोई उपकार नहीं किया, कभी परोपकार नहीं किया, कभी किसी पर दया नहीं की कभी किसी की सहायता नहीं की, जो मानवता से गिरे हुये काम करता है अर्थात जो पशुओं जैसे काम करता है घृणा, नुक्ता चीनी, किसी के दोष देखना उसकी आदत है, मन का गन्दा है, सच्चाई से बहुत दूर है ऐसे आदमी को पत्थर का आदमी कहते हैं।

मानव और पशु में क्या अन्तर है ? हैवान खाता है, सोता है, काम करता है, जीवित रहने की इसको इच्छा है भय खाता है। मानव भी यह सब काम करता है। फिर अन्तर क्या हुआ ? पशुओं में प्रेम है। गाय का बछड़ा मर जाये गाय आंसू बहाती देखी गयी है। बंसुरी के बजाने से Music राग का प्रभाव गाय पर होता देखा गया है। गाय अधिक दूध देने लग जाती है अर्थात हैवानों में भी काम, क्रोध, मोह लोभ और अंहकार है। कुत्ते को कातल का कपड़ा सूंघा दो वह कातल का पता लगा लेगा जोकि मानव नहीं कर सकता है।

मानव और हैवान में अन्तर यह है कि मानव अधिकार को जानता है हैवान नहीं जानता। कहीं घास का ढेर लगा दो सब पशु खाने के लिए आजायें लेकिन अगर किसी का खाना मेज़ पर आजाये यद्यपि वहां पर दस आदमी बैठे हो कोई इस खाने की ओर दृष्टि उठा कर नहीं देखेगा इस लिये अगर कोई आदमी किसी के मन पर छापा मारता है वह पशु है पत्थरका आदमी इसको कह दो।

पशु किसी का भला नहीं कर सकता लेकिन मानव दूसरों का भला कर सकता है। जो अपने जीवन में दूसरों का भला नहीं करता वह भी पशु समान है, पत्थर का आदमी है :—

जो घर प्रीत न प्रेम रस, पुनि रसना नहीं नाम।
ते नर पशु संसार में, उपजे मरे बेकाम।

जिस जीव में प्रेम नहीं, नाम जपता नहीं वह भी पशु समान है। ऐसे लोग पत्थर के आदमी हैं मानव नहीं इसलिए किसी ने खूब कहा है

यूं तो सब खूबियें हैं तेरे जहां में।
मेरी निगाह तरसती है इन्सान के लिए

एक मानव ईश्वर को संकेत करके कहता है कि तेरे संसार में हर एक चीज़ और हर एक गुण है।

तुमने इस संसार में सब कुछ दे दिया लेकिन खेद है कि इस संसार में मानव नहीं है। मेरी दृष्टि मानव को देखने के लिए तरसती है।

कोई यात्रा में मस्त है कोई राजनीति का मतवाला है। कोई लक्ष्मी का पुजारी है कोई संसार में व्यस्त है किसी के पास समय ही नहीं है यह सोचने और विचार करने के लिए कि हम संसार में क्यों पैदा किये गये। यहाँ हमारे आने का क्या मतलब है? जीवन क्या है? आवागमन क्या है? क्या संसार के कष्टों से छूटने का कोई उपाय हो सकता है? इन प्रश्नों पर कोई विचार करने के लिए तैयार नहीं है। समय ही नहीं है। जीवन आवश्यकतायें बढ़ चुकी हैं। दौड़ लगी हुई है कुछ सूझता नहीं है तो ऐसे आदमी को पत्थर के आदमी से समानता दी जाये तो कोई भूल न होगी।

फरिश्ता से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें लगती है महनत ज्यादा।।

एक सूचना है, एक लोकहैड अमरीका में संसार में सबसे बड़ा कारखाना हवाई जहाज़ बनाने का है। इस कारखाना को लाखों पौंड लाभ होता है। इस

कारखाने ने दुनियां के कई देशों की सरकारों के वजीरों और वैम्बरों को रिश्वत देकर अपना कारखाना चलाया। मानवता समाप्त कर दी व्यापार का नियम समाप्त कर दिया। आदर्श केवल रुपया कमाना था। हिन्द सरकार को छापे मारकर बड़ी बड़ी फरमों के निर्देशिकों से बहुत धन मिला है। ये निर्देशक गरीब नहीं हैं। काफी वेतन पाते हैं। फिर इन्होंने हेंराफेरी से धन इकट्ठा क्यों किया किसी का अधिकार छीनकर । क्या आप इनको मानव कहोगे ? ये हैं पत्थर के आदमी।

संसार में डाक्टरी की एक संस्था ऐसी है जो बहुत उत्तम और श्रेष्ट समझी जाती है। जब तक डाक्टर में सहानुभूति न हो, दुखियों और बीमारों से प्रेम न हो वह डाक्टरी नहीं कर सकता है। अगर न करेगा तो कभी सफल न होगा। जिस डाक्टर का जीवन उद्देश्य धन बन चुका है वह भी ग़लती पर है। एक डाक्टर साहिब की बड़ी Practice है। एक स्त्री अपने बीमार बच्चे को लेकर इसके पास आ गई बच्चा बहुत बीमार था। डाक्टर की फीस दस रुपये है। डाक्टर ने बच्चे को देखने से पहले दस रुपये

मांगे। महिला के पास केवल दो रुपये थे जो दवाई के लिए लाई थी। महिला ने कहा कि मैं गरीब हूं मेरे पास दस रुपये नहीं हैं। क्षमा किजिए। डाक्टर ने बच्चे को देखने से इन्कार कर दिया। क्या आप इसको डाक्टर कहोगे ? यह है पत्थर का आदमी।

नोट :— इस डाक्टर को सोचना चाहिए था कि इसने डाक्टरी की शिक्षा जनता के धन के कारण पाई है। चालिक ने कालेज बनाया। सरकार ने प्रोफैसरों के वेतनों पर खर्च किया। इसने इसके बदले पब्लिक को क्या मुआवज़ा दिया। पब्लिक का ऋण इसके सिर पर है। वह नाशुकरा है, स्वार्थी है। क्या कोई डाक्टरी शिक्षा विना सरकारी सहायता के प्राप्त कर सकता है ? बिलकुल नहीं।

पत्थरों से मन्दिर भी बनाये जाते हैं और इन मन्दिरो में पत्थर की मूर्तियें सथापित की जाती हैं। ये पत्थर की मूर्तियें मानवजाति से कई गुणा अच्छी हैं यद्यपि ये मूर्तियें बोलती नहीं है लेकिन इन मूर्तियों के मन में घृणा नहीं द्वेष नहीं राग नहीं। देखने में बहुत सुन्दर हैं। प्रेम इनके मुख पर है और मानव इनकी पूजा करता है, आदर करता है सत्कार किया

जाता है। इन पर विश्वास किया जाता है आशा रखी जाती है।

लेकिन जिस मानव में सहानुभूति नहीं है, जिसमें प्रेम नहीं है जो स्वार्थी है, जिसके सिर पर धन की धुन सवार है ऐसे मानव से पत्थर की मूर्ति कई गुणा अच्छी है। क्या यह ठीक नहीं है ? पत्थर की मूर्तियें पत्थर के आदमी से अच्छी हैं। यह सच्चाई है।

पत्थर के मकान तो संसार में बनाये जाते हैं जिनकी नीव बहुत मज़बूत हो और आयु लम्बी हो लेकिन बनाने वाले ने यह कभी नहीं सोचा, कभी विचार न किया, कभी यत्न न किया कि इन मकानों में रहने के लिए मानव पैदा किए जावें जो सहानुभूति वाले हो, दूसरों के दुख का भान हो :—

अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर।
पर की पीर न जिसे सतावे सो अधर्म वे पीर॥

किसी आदमी को मानव बनने के लिए उपदेश ही नहीं दिया गया। कोई स्कूल, कालेज या मंदिर ऐसा नहीं बनाया गया जहां मानवता सिखाई जाती। क्या अच्छा होता जैसे मकान बनाने पर लाखों रुपया खर्च किया जाता है कुछ रुपया मानव को मानव

बनाने पर भी खर्च किया जाता ताकि वह मानव इन पत्थर के मकानों में रहता और इन मकानों को चार चान्द लग जाते ।

संसार में पत्थर का युग भी हो गुज़रा है । उसको पत्थर का युग इसलिए कहा जाता है कि आदमी ने उस समय पत्थर से अपने सारे काम किये। पता नहीं कि वे आदमी भी पत्थर के थे या नहीं लेकिन पत्थर के निपुण थे । आदमी धीरे धीरे उन्नति करता हुआ मानव बन गया जिसको उन्नत और श्रेष्ट मानव कहते हैं । क्या मानव का यही पदाचार है जो कि एक बिल्ली ने लौमड़ी को बताया ।

कहानी यूं है । एक बार घरेलु विल्ली जंगल में जानिकली । वहां पर ताज़ा और खुली वायु, हरे भरे खेत और पेड़ों का साया देखकर बड़ी खुशी हुई । नई जगह नया दृश्य, नया माहौल । इतने में एक लौमड़ी से इसका मेल हो गया, "कहने लगी कि तुम बड़ी भाग्य शाली हो, बाहर जंगल में खुले मैदान में रहती हो, ताज़ा वायु और ताज़ा पानी है, खाने पीने का सब सामान मौजूद है । तुम तो स्वर्ग में रहती हो ।, लौमड़ी वोली कि जंगल में हर समय जान का खतरा

रहता है। कभी शेर का डर है और कभी किसी और का, मैं जान बचाकर छुप छुपाकर जीवन के दिन काटती हूं। सरदी में बाहर रहती हूं। ठन्ड, वर्षा और बरफ से कोई बचाओ नहीं है विपत्ति में जीवन व्यतीत कर रही हूं। तुम बहुत भागवान हो जो इन्सानों के दरम्यान इनके मकानो में रहतो हो, वहां न किसी का भय है न डर। गर्मी सर्दी से सदा बचाओ है और इन्सानों की संगत में रहकर खुश रहती हो। तुम पर इनकी दया होती रहती है। खाने पीने की कोई कमी नहीं है।

यह सुनकर बिल्ली बोली हाय! तुमने क्या कह दिया मैं इन्सानों का व्यवहार दिन रात देखती रहती हूं। इन्होंने कभी मुझे रोटी का टुकड़ा नहीं फैंकां, मैं कहीं छुपकर कोई चीज़ खाजाऊं तो लाठी लेकर मुझे मारने को फिरते रहते हैं। मैं छुपकर बच जाती हूं। हाये! ये कहां के दयालु हैं? ये तो गिरे हुए सदाचार के आदमी हैं। में इनको अच्छी प्रकार जानती हूं। भाई की भाई से शत्रुता है, भाई भाई को कतल कर देता है, बेटा बाप को मार देता है, इनमें

रत्तीभर प्रेम किसी के साथ नहीं है। बड़े स्वार्थी हैं कभी किसी के काम नहीं आते बेइमान हैं शरारती हैं चोर हैं झगड़ालू हैं इनसे सहायता की आशा करना गलती है इनसे ईश्वर भले बचाये। मैं तो शुकर करूंगी जब इनकी सोसायटी और संगत मुकसे छूट जायेगी।

अगर आपने ईश्वर कृपा से या पिछले जन्म के शुभ कर्मों के कारण नर जन्म लिया है आपको चाहिए आप मानव बनकर जीवन व्यतीत करें पशु बिलकुल न बनना। मानवता सीखना और मानवता के काम करना। अगर मुक्ति न मिल सकी तो नर जन्म और शुभ नर जन्म अवश्य आपको मिलेगा। ऐसा दाता दयाल जी महाराज फरमाते हैं :—

—: शब्द :—

मानुष जन्म सुधारो साधो, मानुष जन्म सुधारो।
अपनी करनी पार उतरनी. मन में समझ विचारो॥
जैसी करनी वैसी भरनी, जन्म जुआ मत हारो।
धन सम्पत और हाट हवेली ऐका काम न आवे॥
यह बन्धन है जन्म की फांसी, अन्त काल पछतावे।
मात पिता सुत भाई बन्धु संग न कोई सहाई॥

गुरु की दया से काज संवारो, बनत बनत बनजाई
अवसर पाया नर तन पाया, दुर्लभ अधिक अनूपा
कर सतसंग सार कछु समझो, निरखो अपना रूपा
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाओ
राधास्वामी चरनन ध्यान लगाकर धुरपद जाये समाजो

सबको राधास्वामी !

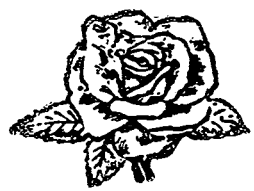

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

गुलज़ारी लाल !

राधास्वामी ! तुम ने कितने स्वाल किये सब दूसरों के लिये किये मगर वास्तव में यह तेरे अपने स्वाल हैं।

१. जो कुछ आप ने लिखा है ठीक है। आवागवन छूटे या न छूटे इस का तो कोई भरोसा नहीं गो आदमी को कोशिश करनी चाहिये मगर ज़िन्दगी में शिव संकल्प रखना चाहिये ताकि कर्म अच्छे बनते रहें।

२. सत्संगी कौन है ? जो संत का संग करता है। मैं अपना अनुभव कहता हूं दावा कोई नहीं यदि कोई सत वास्तव में है तो ए इन्सान ! तेरी अपनी ही ज़ात है। जाग्रत में भी तुम हो, गहरी नीन्द में भी तुम हो। अन्तर में अभ्यास करते हो, प्रकाश में भी तुम हो, शब्द सुनते हो इस वक्त भी तुम हो। जो कुछ भी तुम्हारे सामने आता है यह तो ख़तम हो

जाता है ओर फिर पैदा हो जाता है मगर तुम हमेशा रहते हो। जो व्यक्ति अपने आप में रहता है और किसी दूसरी वस्तु जो इस के अन्तर से प्रकट होती है इस के अश्रित नहीं है मगर उस में रहता हुआ उस का आनन्द लेता है वही जीवन मुक्त है और वही असली सत्संगी है मगर इस अवस्था को हासिल करना आसान बात नहीं। इस के लिए इन्सान एक इष्ट बनाता है, उस को पूर्ण मानता है। उस को पूर्ण मान कर उससे बाहर में या जाग्रत में स्वप्न में, और अभ्यास में प्रेम करता रहता है वह पहुंच सकता है अर्थात वह उस अवस्था को हासिल कर सकता है बशर्तेकि उसे कोई कामिल गुरु मिला हुआ हो वरना वह द्वैत के अंग में बह जायेगा। मैंने उस सत को (मैं अपनी बाबत कहता हूं, लोगों का पता नहीं) दाता के रूप में माना था और आप सत्संगियों की बदौलत मुझे राज़ का पता लग गया।

३. मैंने तुम को लिखा कि तुमने दूसरों का हवाला दिया। तुम को दूसरों से क्या मतलब ?

यह ठीक है कि आखरी अवस्था में पाप पुन्य नहीं रहता :-

पाप पुन्य भयो दोऊ कहावत ।

यह नानक साहब ने कहा है ।

४. तुम ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने शान्ति अनुभव द्वारा प्राप्त कर ली थी मगर उस की मौत घटना द्वारा या मानसिक रोग से हो जाये तो उस का अन्त समय क्या हाल होगा ? इस का जवाब अगर समझ सकते हो तो समझ लो । गुरु नानक साहब ने मुक्ति को बापुरी कहा है । सन्त मुक्ति की परवाह नहीं करते । उनका आर्दश मुक्ति नहीं है । सन्तों का मार्ग भक्ति का है । जब तक जीवन है वह अपने आप को बात को समझ कर इस ज्ञात, परम तत्व अकाल जो सब का आधार है उस का सहारा रखते हैं । बाकी यह रहा स्वामी जी ने कहा है :-

जिस पर दया आद करता की वह यह नयामत पाए ।

गुलज़ारी लाल ! सच पूछते हो यह जो कुछ हो रहा है यह किसो और के अधीन है । हम अपनी "मैं" में आकर कोई भक्ति करता है, कोई योग करता है, कोई गुरु बनता है, कोई चेला बनता है । तुम ऐसे

ख्याल खतों में लिखते [illegible] कई [illegible] की ऐसी हालतें हैं जो लफ़्ज़ों द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकतीं।

४. मैं लिखा करता हूं कि मेरे अपने अन्तर से जो संस्कार तार, रेल की नौकरी, मां बाप बीबी इत्यादि जिन को मैंने अपना दिल दे कर प्यार किया, काम किया, वह अब तक भी कभी कभी मेरे स्वप्न में आ जाते हैं मगर यह मन्दिर और इस वक्त के मेरे मिलने वाले सत्संगी या आप लोग कभी नहीं आये। इसलिये मेरे ख्याल में निष्काम कर्म करना बेहतर है। मां बाप भाई बच्चे केवल अपनी ड्यूटी समझ कर पूरी करो दिल न दो। मैं खुद नहीं कह सकता कि मेरी अन्तिम दशा क्या हो :-

नथ खसम दे हथ

इसलिये बाकी बातें खतों की बजाये सतसंग में आया करो। खरबूज़े को देखर खरबूज़ा रंग पकड़ता है।

आपका :-
फकीर !

करबद्ध प्रार्थना

अपने कर्म के चक्कर में आकर कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा और हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की आज्ञानुसार कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना और हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञा कि निर्भय होकर काम कर जाओ, मैं आज ३५ साल से यह काम कर रहा हूं।

हमारी यह संस्था एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के अधीन है, कानून के अनुसार हम को जितना रुपया साल का आता है वो उसी साल में कम से कम ७५ प्रतिशत खर्च कर देना चाहिए। इसलिए मैंने फ्री प्रकाशन होम्योपैथिक, एलोपैथिक, आंखों और दान्तों के हस्पताल जारी किये। पिछले वर्ष हस्पतालों में ५५५३२ रुपये दो पैसे खर्च आया और फ्री प्रकाशन में ३३३३२ रुपये ९३ पैसे खर्च आया।

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने वालों की संख्या २६०० हो गई है और लगातार बढ़ रही है मेरी आयु ९१ वर्ष की हो गई है। मुझ से अब अधिक

सफर नहीं होता, इसलिये हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि जिन सज्जनों की मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची न हो वे इसे न मंगावें और जो मंगवाते हैं अगर उनकी आत्मा गवाही देती है कि उनको इस पत्रिका से कुछ लाभ होता है तो वे कृपा करके मन्दिर की यथा शक्ति सहायता करें।

रह गया हस्पताल, जब तक चलेगा चलाऊंगा नहीं तो बन्द कर दूंगा।

मैंने यह काम अपनी नियत से बड़ी सच्चाई और निष्काम भाव से किया है। मैं यह जानता हूं कि दुनियां रोचक और भयानक बातों की तरफ ज्यादा झुकती है, फिर भी सच्चे मन से अपने कर्त्तव्य या कर्म को भोग कर इस संसार से जाना चाहता हूं।

हमारी संस्था में जानता के धन का उचित उपयोग होता है। मैं मानव मन्दिर मासिक पत्रिका का मूल्य रख देता किन्तु मैं ब्राह्मण होने के नाते अपने अनुभव को जो सारे जीवन के संघर्ष से प्राप्त किया है इसे बेचना नहीं चाहता। दान के रूप में जो इच्छा हो भेज सकते है।

फकीर !

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **Manavta the true religion**

Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj

2. अनुभवसार (हिन्दी)

लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट रसड़ा।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी) – मासिक पत्रिका।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :

मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

NW—HSP—7.

1/28

ADDRESS

To

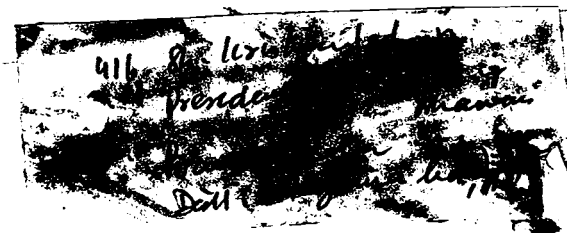

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022